यूरोप का प्रादेशिक भूगोल

यूरोप महाद्वीप सम्पूर्ण विश्व के 6 प्रतिशत भाग पर फैला हुआ है। यहाँ पर विश्व की 9 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। भौगोलिक दृष्टिकोण से इन्हें निम्न वर्गों में रखा जाता है।

1. **स्केण्डिनेवियाई देश–** आइसलैण्ड, नार्वे, स्वीडन तथा डेनमार्क।
2. **बाल्टिक देश–** एस्टोनिया, लिथुआनिया, एवं लाटविया (पूर्व सोवियत संघ के घटक गणतंत्र, जो अब स्वतंत्र देश हैं)।
3. **निचले देश–** एस्टोनिया, नीदरलैण्ड्स तथा लक्जमबर्ग (Bene-Lux)।
4. **बाल्कान देश–** युगोस्लाविया, स्लैवेनिया, बेस्निया- हर्जगोविना, क्रोशिया, मेसेडोनिया, अल्बनिया, ग्रीस (यूनान), बुल्गारिया तथा रोमानिया।
5. **स्वतंत्र देशों का राष्ट्रकुल–** पूर्व सोवियत संघ के बाहर गणतंत्रें (अब स्वतंत्र देशों) का समूह-जिसमें रूस, यूक्रेन, बेलारूस, मोल्दोवा, जार्जिया, अजरबैजान, आर्मीनिया, कजाकस्तान, किर्गिजस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान एवं उजबेकिस्तान सम्मिलित हैं। मध्य एशियाई गणतंत्रें को छोड़कर अन्य सभी देश यूरोप में आते हैं।
6. **आइबेरियन प्रायद्वीप–** इसमें पुर्तगाल, स्पेन, फ्रांस, तथा भूमध्यसागर तटवर्ती देश सम्मिलित हैं।
7. **स्थल आबद्ध देश–** हंगरी, चेक गणतंत्र, स्लोवाकिया, आस्ट्रिया, स्विटजरलैण्ड तथा वेटिकन सिटी सम्मिलित हैं।

धरातल– भौतिक रचना की दृष्टि से यूरोप के चार विभाग किये जा सकते हैं (i) उत्तरी पश्चिमी उच्च भूमि, (ii) उत्तरी यूरोपीय मैदान, (iii) मध्यवर्ती उच्च भूमि, एवं (iv) अल्पाइन श्रेणियाँ।

यूरोप को यूरेशिया महाद्वीप का **प्रायद्वीप** (A Peninsula of Eurasia) कहा गया है जिसके उत्तर में उत्तर महासागर (Arctic Ocean), दक्षिण में भूमध्यसागर (Mediterranean Sea) और पश्चिम में अटलांटिक महासागर (।जसंदजपब वबमंद) है। पूरब में यह एशिया से मिला हुआ है। यूराल पर्वत, यूराल नदी और कैस्पियन सागर इसकी पूर्वी सीमा बनाते हैं। 40°N अक्षांश रेखा इस महादेश के स्पेन-पुर्तगाल से (बीचो-बीच) गुजरती हुई इटली के दक्षिणी छोर और ग्रीस को पारकर कालासागर के दक्षिण से होकर कैस्पियन-सागर को काटती हुई जाती है। 0° देशांतर रेखा आइसलैंड से होकर, 20°N देशांतर रेखा नार्वे, स्वीडन, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, युगोस्लाविया और अलबानिया से होकर, तथा 40°E देशांतर रेखा सोवियत संघ (रूस) के मध्य से होकर गुजरती है। सम्पूर्ण महादेश उत्तरी गोलार्द्ध में (35°N से 70°N और 25°W से 60°E के बीच) स्थित है और अपनी महत्वपणर्ू स्थिति के कारण यह विश्व के सभी उन्नत भू-भागों से सम्बंध स्थापित कर सका है।

यूरोप: भूगर्भिक संरचना

लगभग 50 करोड़ वर्ष पूर्व यूरोप उत्तरी-पश्चिमी भूभाग बाल्टिक शील्ड के रूप में विद्यमान था। आर्कियन युग की प्राचीनतम और रूपांतरित चट्टानों से निर्मित इस शील्ड का विस्तार बाल्टिक सागर के चारों ओर होने के कारण ही इसे बाल्टिक शील्ड नाम दिया गया, जिसकी पूर्वी सीमा व्याइट सी (White Sea) से लेकर ओनेगा और लैडोगा झील होती हुई फिनलैंड की खाड़ी (Gulf of Finland) तक मानी जाती है। पूर्व में अदृश्य शील्ड के रूप में इसका विस्तार यूराल पहाड़ (Ural Mountains) तक और दक्षिण में कैस्पियन सागर तथा आल्प्स की श्रेणियों तक है जहाँ इसके ऊपर नवीनतम चट्टानों का निक्षेप है।

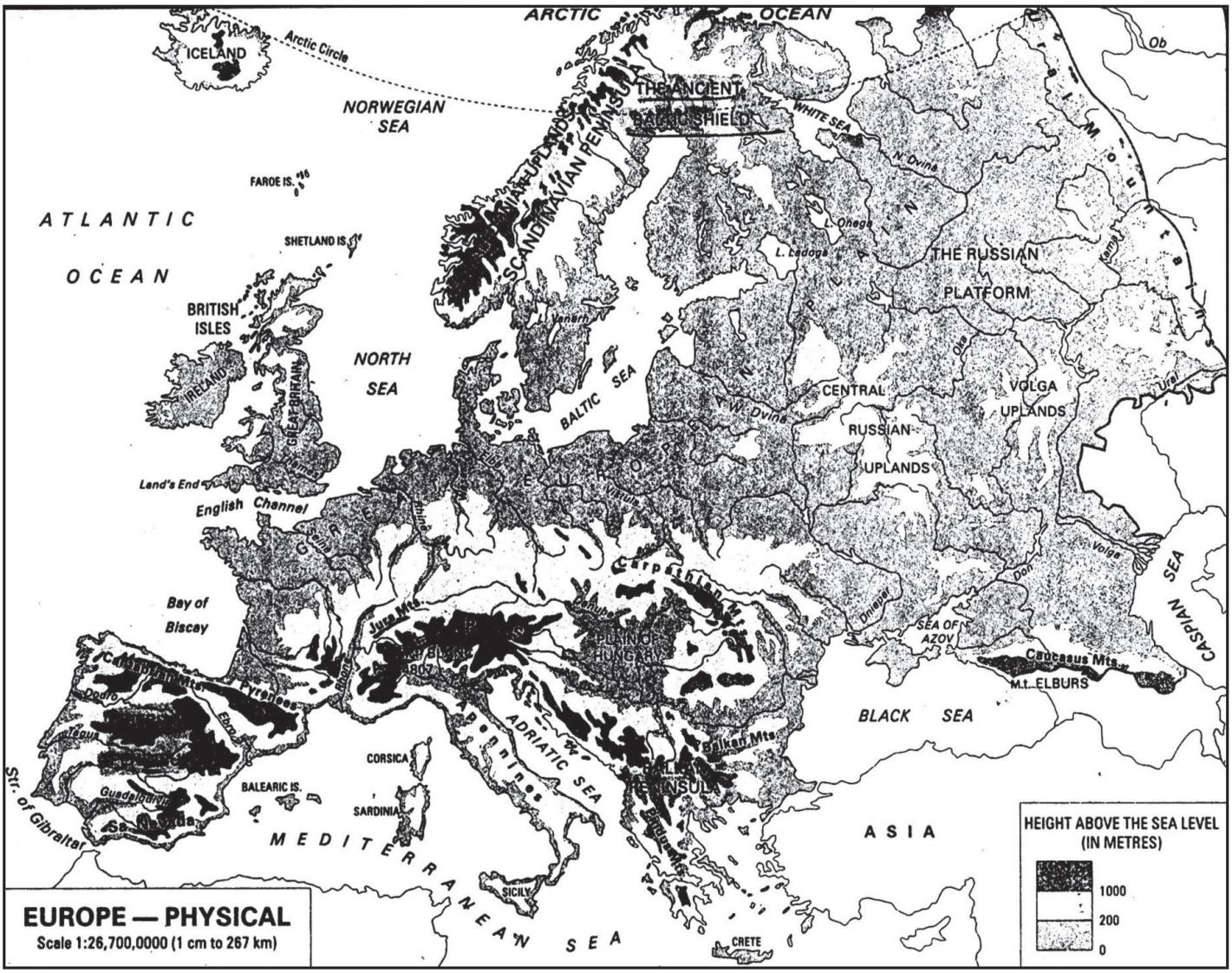

Europe-Physical features

इस शील्ड के पश्चिमी छोर पर विशाल **कैलिडोनियन पर्वतश्रेणी** (Caledonian Range of Mountains) का निर्माण हुआ जिसके अवशेष के रूप में स्काटलैंड की पहाड़ियाँ और स्कैडिनेविया की उच्च भूमि आज भी देखी जा सकती है। कैलिडोनियन भूसंचलन 32 से 40 करोड़ वर्ष पूर्व हुआ था।

बाल्टिक शील्ड तथा कैलिडोनियन पर्वत कालान्तर में घिस चले। इनके अवसाद (तलछट) नदियों द्वारा निकटवर्ती समुद्र में (जहाँ आज मध्यवर्ती यूरोप है) परतों में जमा होते गए। कालक्रम में यह समुद्र बालू, मिट्टी और चूना से भर चला और इसके दलदल भाग में घने वन उग आए जो दब कर कोयला बन गये।

कुछ करोड़ वर्षों के बाद भूसंचलन से भूपटल की चट्टानों में जबरदस्त मोड़ और मोड़दार पर्वतों की जो श्रेणी बनी उसे **हरसीनियन पर्वत श्रेणी** (Hercynian Range of Mountains) नाम दिया गया। यह पर्वतश्रेणी आज मौजूद नहीं है किन्तु इसका विस्तार मध्यवर्ती यूरोप में (दक्षिणी ब्रिटेन, फ्रांस, स्पेन और जर्मनी के पार तक) था। हरसीनियन भूसंचलन 22 से 25 करोड़ वर्ष पूर्व हुआ था। पूरब में यूराल पर्वत का निर्माण इसी भूसंचलन से हुआ। पश्चिम में द. प. आयरलैंड, वेल्स और कॉर्नवाल-डेवन की उच्चभूमि हरसीनियन पर्वतश्रेणी के ही अवशेष हैं।

कालान्तर में यूरोप का एक बड़ा भाग सागर में निमग्न हो गया जिससे वहाँ नदियों द्वारा लाई मिट्टी आदि की परतें बिछ गईं। यूरोप की निम्नभूमि इन्हीं परतदार चट्टानों से ढकी है।

अंतिम भूसंचलन 3 से 7 करोड़ वर्ष हुआ जिसके फलस्वरूप बड़े स्तर पर पर्वतश्रेणियों का निर्माण हुआ और ये यूरोप की नवीन पर्वत श्रृंखलाएँ (New Mountain Chanins of Europe) या अल्पाइन पर्वत श्रेणी (Alpine Range of Moountains) कहलाती है। ये पर्वत श्रेणियाँ अभी घिस नहीं पाई है। आज यूरोप के सर्वोच्च शिखर इन्हीं में मिलते हैं।

कोई 5 लाख वर्ष पूर्व यूरोप में हिमयुग आया अर्थात् ठंढक बढ़ने लगी और हिमपात होने लगा। यह हिमपात इतना अधिक हुआ कि ग्रीष्मकाल में भी हिमावरण न हट पाया। यूरोप की समस्त उच्चभूमि, विशेषतया स्कैंडिनेविया, सैकड़ों मीटर मोटे हिमपट से आच्छादित रही। वहाँ से मैदान भाग में ओर हिमनद प्रवाहित होते रहे। हिमनदों और हिमनिःसृत जल-धाराओं से हिमजलोढ़ मैदानों (Outwash Plains) का निर्माण हुआ जिस पर कही-कहीं हिमोढ़ के टीले बन गए। उत्तरी यूरोप की अधिकतर झीलें हिमनदों के अपरदन या निक्षेपण से बनीं।

संरचना और प्राकृतिक स्वरूप की दृष्टि से यूरोप के तीन स्पष्ट विभाग हैं

1. उत्तर पश्चिम की अति प्राचीन उच्चभूमि।
2. मध्य का विशाल-मैदान।
3. दक्षिण के पर्वतीय भाग (नये और पुराने पर्वत और इन पर्वतों से घिरी नदी-घाटियाँ)।

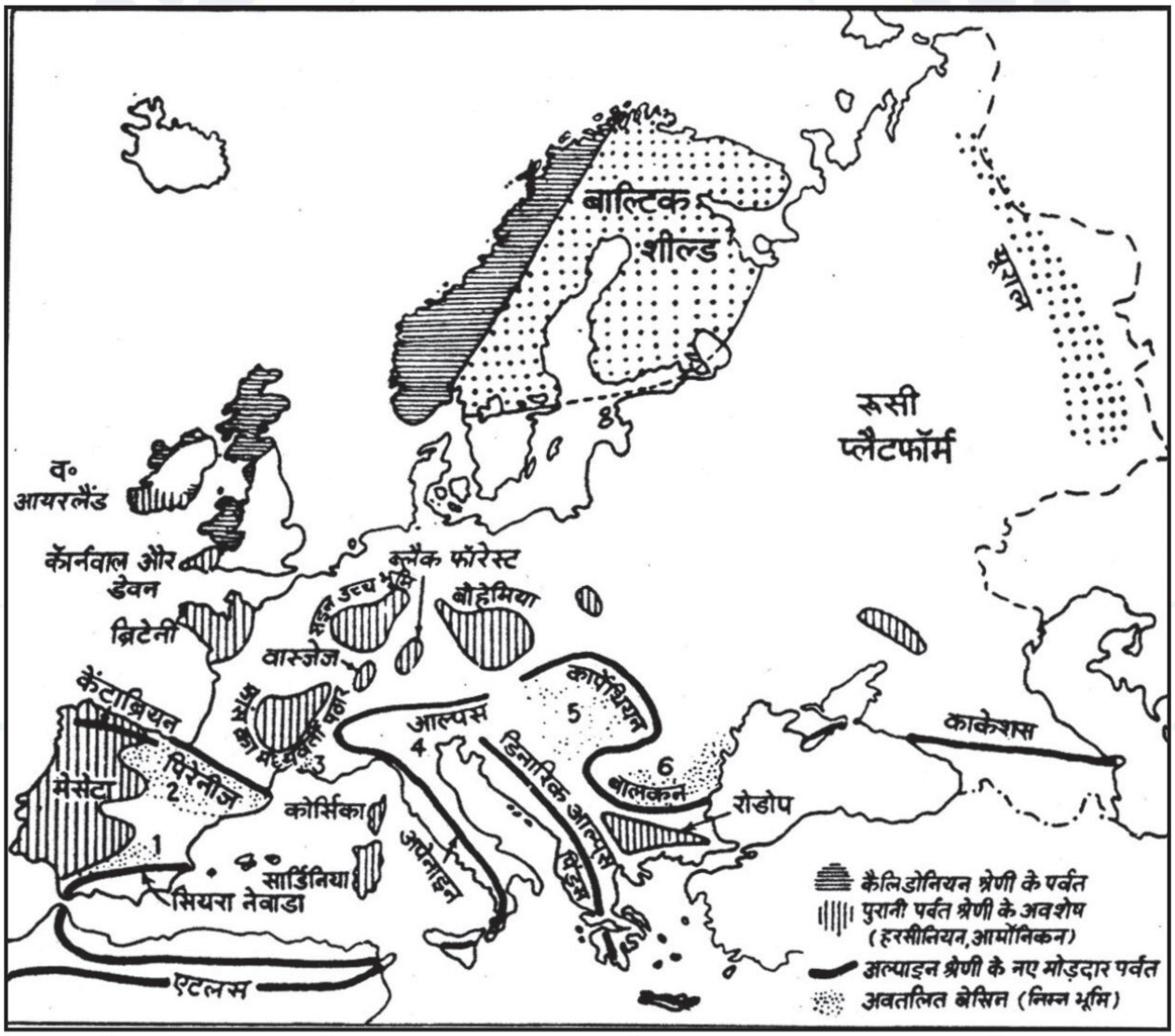

यूरोप की संरचना और प्राकृतिक स्वरूप। संकेत : 1. अलुसिया, 2. आरागोन, 3. रोन की निम्न घाटी, 4. पो- घाटी, 5. हंगरी का मैदान, 6. रूमानिया का मैदान।

यूरोप की जलवायु

- बहुत थोड़े-से उत्तरी भाग को छोड़कर यह शीतोष्ण- कटिबंध में स्थित है।
- इस महादेश का विस्तार पूर्व-पश्चिम में अधिक है। पूर्व में यह एशियाई भूखण्ड से मिला हुआ है और पश्चिम में अटलांटिक महासागर तक चला गया है। इस कारण मध्य और पूर्वी भाग की जलवायु विषम या महाद्वीपीय है और वहाँ तापांतर अधिक मिलता है। समुद्र से दूर स्थित होने के कारण।
- यह सालोभर पश्चिमी पवन/पछुआ हवाओं के प्रभाव में रहता है, केवल दक्षिणी भाग (भूमध्यसागर के आसपास के क्षेत्र) वायु-दाब की पट्टियों के खिसक जाने के कारण गर्मी में उ.-पूर्वी पवन के प्रभाव में आ जाता है। पश्चिमी पवन से वर्ष भर वृष्टि होती है। दक्षिणी भाग केवल जाड़े में पश्चिमी पवन के प्रभाव में रहता है।
- यूरोप में उच्च पर्वतीय भाग और विशाल मैदानी भाग का विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर है, फलस्वरूप यहाँ अटलांटिक महासागर से आने वाले पश्चिमी पवन (Westerlies) सीधे प्रवेश कर जाते हैं। उत्तर की ओर भी किसी-प्राकृतिक अवरोध के अभाव में आर्कटिक महासागर की सर्द हवाएँ बेरोक-टोक मध्य-पूर्व तक चली आती हैं।
- दक्षिणी पर्वतश्रेणियाँ की दिशा जल-वायु विभाजक का काम करती है। उत्तर-पश्चिमी उच्चभूमि कम ऊँची होने पर भी समुद्र की ओर से आने वाली हवाओं से अधिक वर्षा कराती है।
- यूरोप के भीतरी तक समुद्र और खाड़ियों का प्रवेश हुआ है, जैसे- उत्तर सागर, बाल्टिक सागर, फिनलैंड की खाड़ी बोथनिया की खाड़ी, एड्रियाटिक सागर, एजीयन सागर, काला सागर इत्यादि।

समुद्र की भुजाओं का दूर तक प्रवेश यूरोप की जलवायु पर समकारी प्रभाव डालता है। समुद्र के दूर तक घुसे होने के कारण आंतरिक भाग की दूरी समुद्रतट से 300 किमी. तक ही रहती है और पूर्वी भाग को छोड़कर कहीं विषम जलवायु नहीं हो पाती। पश्चिम में अटलांटिक महासागर की स्थित होने के कारण वहाँ से चलने वाली पछुआ हवाएँ सालोभर वर्षा कर पाती है।

वर्षा का वितरण

- यूरोप में वर्षा का प्रादेशिक वितरण असमान है। यहाँ अधिक वर्षा के दो प्रदेश मिलते हैं (i) पश्चिमी प्रदेश, जो प्रचलित पश्चिमी पवनों (Westerly Winds) के सम्मुख पड़ता है। पूर्व की ओर बढ़ने पर वर्षा की मात्र क्रमशः घटती जाती है। पूर्वी प्रदेश प्रायः वृष्टिछाया प्रदेश बन जाते हैं, अतः वहाँ अपेक्षाकृत कम वर्षा होती है। (2) पर्वतीय प्रदेश, जो वाष्पयुक्त पवनों को रोककर वर्षा कराने में सहायक होता है। जैसे- ब्रिटेन के पेनाइन क्षेत्र, नार्वे के पश्चिमी भाग और केंटाब्रियन, पिरेनीज, आल्प्स, डिनारिक तथा काकेशस क्षेत्र।
- **सबसे कम वर्षा के प्रदेश** भी दो हैं - (1) उत्तर-पूर्वी यूरोप और (2) दक्षिण-पूर्वी यूरोप। उत्तर-पूर्वी यूरोप टुंड्राप्रदेश है जहाँ तापमान सबसे कम रहा करता है और जाड़े में हिमपात होता है तथा गर्मी में 25 सेमी. से कम वर्षा होती है। दक्षिण-पूर्वी यूरोप पश्चिमी पवनों (Westerly Winds) तथा उनका जलवाष्प समाप्त हो जाता है, अतः वह शुष्क प्रदेश बन जाता है। पश्चिमी यूरोप में जहाँ 200 सेमी. से अधिक वर्षा होती है। द. पूर्वी यूरोप को 50 सेमी. से भी कम वर्षा है, फलतः वहाँ अर्द्धमरुस्थलीय जलवायु मिलती है (कैस्पियन सागर के आसपास)।
- यूरोप में सर्वत्र एक ही ट्रतु में वर्षा नहीं होती। कहीं तो यह सालोभर होती है तो कहीं गर्मी में और कहीं जाड़े में। उदाहरणार्थ, पश्चिमी यूरोप में वर्षा की कोई विशेष ट्रतु नहीं होती। समुद्र की ओर से आने के कारण ये वाष्पयुत्तफ़ होती हैं और इनसे सालोभर हल्की वर्षा (Light Rain Throughout The Year) होती हैं, किन्तु पूर्वी यूरोप में मुख्यतः गर्मी में (ग्रीष्मकालीन) वर्षा हुआ करती है और जाड़े की ऋतु शुष्क होती है।
- जाड़े के दिनों में सारा यूरोप पश्चिमी पवन तथा उनसे मिले चक्रवातों (Cyclones or Depressions) के प्रभाव में रहता है। चक्रवातों के उत्प होने का कारण ध्रुवीय प्रदेश में वायुराशि के एकत्र हो जाने के फलस्वरूप दक्षिण की

ओर बढ़ने का प्रयास करती है। इस समय सारे यूरोप में वर्षा होती है। (Rainfall और Snowfall के रूप में)। जो भाग पश्चिम और दक्षिण में हैं, वहाँ अपेक्षाकृत अधिक वर्षा होती है।

- आर्कटिक जलवायु-प्रदेश-उत्तरी भाग में आइसलैंड, उत्तरी फिनलैंड तथा उत्तरी रूस इस जलवायु-प्रदेश के अंतर्गत आते हैं।
- अधो-आर्कटिक जलवायुप्रदेश-आर्कटिक जलवायु प्रदेश के ठीक दक्षिण अद्यो-आर्कटिक प्रदेश है। यहाँ भी सालोभर ठंढक पड़ती है और दीर्घकाल तक भूमि हिमाच्छादित रहती है किन्तु ग्रीष्मकाल अपेक्षाकृत बड़ा होता है।

भूमध्यसारगीय प्रदेश (Mediterranean Region)- दक्षिणी यूरोप में समुद्र के किनारे के भू-भाग भूमध्यसागरीय जलवायु के अन्तर्गत आते हैं।

- जाड़े में पश्चिमी पवनों की पट्टी दक्षिण की ओर खिसकने के कारण यहाँ अच्छी वृष्टि होती है किन्तु गर्मी के दिन शुष्क रहते हैं। उन दिनों आकाश साफ रहता है, अतः सूर्य की किरणें तीखी पड़ती हैं। ग्रीष्मकाल में यहाँ तापमान 20^0 से 27^0C रहता है और शीतकाल में 4^0 से 10^0C तक। इस प्रकार, वार्षिक तापांतर कम ही रहता है। शीतकलीन वर्षा रसदार फलों की खेती के लिए उपयुक्त है और ग्रीष्मकाल की धूप फलों के उत्पादन में लाभप्रद सिद्ध होती है।
- भूमध्यसारगीय प्रदेश में कई स्थानीय हवाएँ भी चला करती हैं; जैसे- मिस्ट्रल (Mistral) फोन (Fohn), बोरा (Bora), सिरक्को (Sirocco) और लेवाशे (Leveche)।

जल प्रवाह प्रणाली

यूरोपीय नदियां ढाल का अनुसरण करते हुए बहती है।

डैन्यूब नदी (R. Danube) इसका उदाहरण है जो आल्प्स और कार्पेथियन के बीच ढाल के अनुरूप बहती हुई समुद्र में गिरती हैं।

यूरोप की केवल एल्ब नदी (R. Eibe) ही ऐसी है जो पहाड़ (Erzga-Birge mountain) को काटकर अपना मार्ग बनाती है। यह पूर्वगामी नदी (Antecedent River) का उदाहरण प्रस्तुत करती है और सभी नदियां अनुवर्ती है।

यूरोप में **दक्षिणी पर्वतश्रेणियाँ प्रमुख जलविभाजक** का काम करती है। इनके दोनों और नदियाँ निकलती हैं। दक्षिणी में नदियाँ भूमध्यसागर में गिरती हैं और उत्तर में अटलांटिक महासागर के अंग बिस्के की खाड़ी, इंगलिश चैनेल, उत्तर सागर और बाल्टिक सागर में।

पूर्व में **रूसी प्लैटफार्म जलविभाजक** का काम करता है। वोल्गा, यूराल, दोन इत्यादि नदियाँ इस प्लैटफार्म की ढ़ालों से प्रवाहित होकर दक्षिण की ओर काला सागर और कैस्पियन सागर में गिरती हैं या उत्तर की ओर आर्कटिक महासागर में।

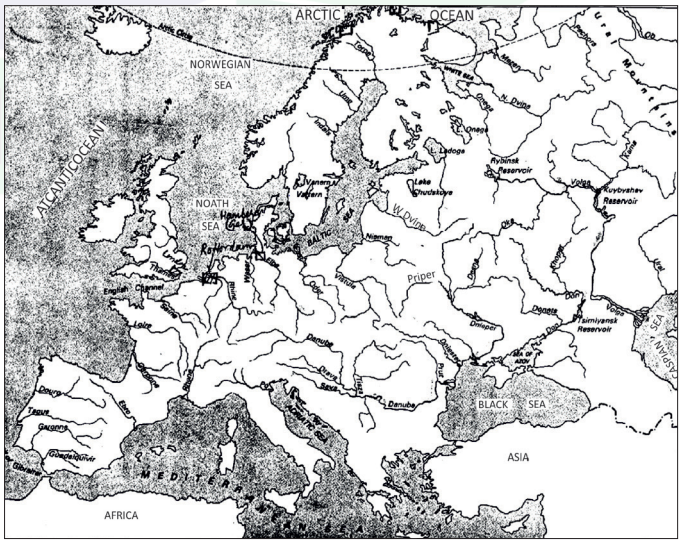

1. अटलांटिक नदी-प्रणाली (Atlantic Drainage System)
2. भूमध्यसागरीय नदी-प्रणाली (Mediterranean Drainage System)
3. सोवियत रूस की नदी-प्रणाली (Drainage of Soviet Russia)

यूरोप की प्राकृतिक वनस्पतियां

1. टुण्ड्रा वनस्पति प्रदेश

- यह नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड, रूस के उत्तरी तथा पश्चिमी भाग में फैला हुआ है। इस भाग में आइसलैंड भी शामिल है।
- इस आर्कटिक प्रदेश में मुख्य रूप से लिचन तथा मॉस नामक वनस्पति मिलती है। कम ठण्डे प्रदेशों में छोटे-छोटे विलो तथा बर्च के वृक्ष उगते हैं।
- दलदली भूमि तथा ठण्डी जलवायु के कारण मुद्रा का विकास कम है।

2. टैगा कोणधारी वन प्रदेश

- टुण्ड्रा प्रदेश के दक्षिण में 62^0N अक्षांश तक यह वन प्रदेश एक पट्टी के रूप में है। इसमें उत्तरी रूस, फिनलैंड, स्वीडन तथा नार्वे शामिल हैं।
- पूर्वी भाग में कोणधारी वन प्राकृतिक रूप में उगते हैं। एक विशाल क्षेत्र में बहुत कम जातियों के वृक्ष पाये जाते हैं, जैसेपाइन, स्प्रूस, लार्च, सिल्वर, फर, बर्च इत्यादि।
- यह नर्म लकड़ी का वन कागज़, फर्नीचर, लुग्दी, माचिस डिब्बिया तथा पैकिंग पदार्थ बनाने के काम आती है।
- भूरे गहरे रंग की मृदा अम्लीय है जिसमें ह्यूमस की कमी होती है।

3. मिश्रित वन प्रदेश

- 60^0N अक्षांश रेखा के दक्षिण में कोणधारी तथा चौड़ी पत्ती वाले मिश्रित वन मिलते हैं। यूराल पर्वत से लेकर स्पेन तक यह एक त्रिकोण प्रदेश है। यहां चक्रवात चलते हैं। शीत तथा शुष्क ऋतु का अभाव है।
- पश्चिमी भाग में चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष मिलते हैं जिनमें बीच प्रमुख है। उत्तरी भाग में कोणधारी वन तथा दक्षिणी भाग में कोणधारी घास मिलती है।
- कोणधारी वनों के क्षेत्र में अम्लीय पॉडज़ोल मिट्टी मिलती है। चौड़ी पत्ती के वन क्षेत्रों में भूरे रंग की मिट्टी मिलती है जोकि अधिक उपजाऊ है। गहरे रंग की मिट्टी को शरनोज़म मिट्टी कहते हैं।

4. पतझड़ी वन प्रदेश

- यह वन मध्य तथा पश्चिमी यूरोप में पाये जाते हैं। इसमें इंग्लैंड, आयरलैंड, फ्रांस, बैल्जियम, हालैंड, डैनमार्क, आस्ट्रिया, हंगरी, रोमानिया तथा बल्गेरिया शामिल हैं।
- यहां के वृक्ष ग्रीष्म ऋतु में कम नमी के कारण अपने पत्ते गिरा देते हैं। इन वनों के मुख्य वृक्ष ऐश, एल्म, ओक, पोपलर, एल्डर तथा बीच हैं। यहां अधिकतर वन कृषि और निवास स्थानों के लिये साफ कर दिये गए हैं।

5. शीतोष्ण घास के मैदान

- चौड़ी पत्ती वाले पतझड़ वनों के दक्षिण बुल्गेरिया, हंगरी, रोमानिया तथा रूस में शीतोष्ण घास के मैदान मिलते हैं।
- यह क्षेत्र पूर्ण रूप से घास के मैदान हैं। यहां तीन प्रकार की घास होती हैः (1) वन प्रदेश स्टैप (2) स्टैप घास के मैदान (3) मरुस्थलीय स्टैप प्रदेश।
- यहां शरनोज़म नामक उपजाऊ मिट्टी मिलती है। यहां कम वर्षा के कारण बसंत ऋतु में घास तथा फूल उगते हैं। ह्यूमस की मात्रा अधिक होने के कारण इस उपजाऊ मिट्टी में कृषि का बहुत विकास हुआ है।
- पूर्वी भाग में कैस्पियन सागर के इर्द-गिर्द मरुस्थलीय स्टैप प्रदेश है। यहां 25 सेमी. से कम वर्षा होती है तथा मिट्टी उपजाऊ नहीं है।

6. भूमध्यसागरीय वनस्पति प्रदेश

- भूमध्यसागर के साथ-साथ दक्षिण यूरोप के प्रदेश में यह वनस्पति पाई जाती है।
- भूमध्यसागर के साथ-साथ दक्षिणी यूरोप के प्रदेश में यह वनस्पति पाई जाती है।
- यहां कई प्रकार की वनस्पति है। कॉरसिका द्वीप में मैक्विस तथा फ्रांस में गैरिगनामक शुष्क झाड़ियां मिलती हैं।
- नोकीले पत्ते ओटी तने तथा लम्बी जड़ें ग्रीष्म काल की शुष्क ऋतु को सहन करते हैं।
- मुख्य वृक्ष जैतून, कार्क, ओक तथा पाइन हैं। मिरटन, लेवंडर, मिंट, होली नामक खुशबूदार पौधे उगते हैं।
- यहां नींबू, नारंगी, संतरा और अंगूर आदि फलों के वृक्ष उगते हैं।
- चूने के प्रदेशों में उपजाऊ मृदा पाई जाती है।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR